Gyanvividha, Vol.-3; Issue-3 (July-September) 2026 : PP-77-82

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विषयों की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध-पत्रिका

**ISSN : 3048-4537(Online)**
**3049-2327(Print)**
**IIFS Impact Factor-6.125**
Vol.-3; Issue-3 (July-Sept.) 2026
Page No.- 77-82
**DOI : 10.71037/gyanvividha.v3i3.10**
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

**Author's :**

**1. प्रियंका**
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़.

**2. डॉ. देवेन्द्र सिंह राजपूत**
सहायकाचार्य, संस्कृत विभाग, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़.

Corresponding Author :

**प्रियंका**
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़.

# अग्निपुराण में शिक्षा, नैतिकता एवं व्यक्तित्व निर्माण (भारतीय ज्ञान परम्परा के परिप्रेक्ष्य में एक समीक्षात्मक अध्ययन)

**सार (Abstract) :** भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तक का ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास करना भी है। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य में अच्छे संस्कार, नैतिकता, कर्तव्यों का पालन करना और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। भारतीय पुराण साहित्य में अग्निपुराण का विशेष महत्त्व है। यह केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं है बल्कि इसमें धर्म, दर्शन, राजनीति, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, शिल्पकला, धनुर्वेद, काव्य, नाट्य तथा समाज से जुड़े अनेक विषयों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इस कारण इसे भारतीय ज्ञान परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है। अग्निपुराण के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि सत्य बोलना, संयम रखना, सदाचार का पालन करना, आत्मानुशासन विकसित करना, अपने कर्तव्यों का पालन करना तथा समाज कल्याण के लिए कार्य करना है। इस ग्रन्थ में गुरु-शिष्य परम्परा, ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय, धर्म और अच्छे आचरण के माध्यम से आदर्श व्यक्ति के निर्माण पर विशेष बल दिया गया है। इसके साथ ही राजा, गृहस्थ तथा समाज के विभिन्न वर्गों के कर्तव्यों और नैतिक दायित्वों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में अग्निपुराण में वर्णित शिक्षा, नैतिकता और व्यक्तित्व निर्माण से संबंधित सिद्धान्तों का अध्ययन किया गया है। साथ ही यह भी बताया गया है कि इन सिद्धान्तों का वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में क्या महत्त्व है। अध्ययन से पता चलता है कि अग्निपुराण में निहित शिक्षा और नैतिक मूल्य आज भी एक अच्छे, जिम्मेदार नागरिक के निर्माण में उपयोगी हैं।

**मुख्य शब्द:** - अग्निपुराण, भारतीय ज्ञान परम्परा, शिक्षा, नैतिकता, व्यक्तित्व निर्माण, गुरु-शिष्य परम्परा, स्वाध्याय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020।

**प्रस्तावना :** भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी समृद्ध ज्ञान-परम्परा है। प्राचीन समय से ही वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ, महाकाव्य और पुराण भारतीय समाज के ज्ञान, संस्कृति और जीवन-दर्शन के प्रमुख स्रोत रहे हैं। इन ग्रन्थों में शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना या आजीविका प्राप्त करना नहीं था बल्कि व्यक्ति का नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास करना भी था। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य में अच्छे संस्कार, चरित्र, अनुशासन और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित की जाती थी।

अष्टादश महापुराणों में अग्निपुराण का विशेष स्थान है। यह केवल धार्मिक कथाओं का ग्रन्थ नहीं है बल्कि इसमें धर्म, राजनीति, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, धनुर्वेद, व्याकरण, काव्य, अलंकार, नाट्य, मूर्तिकला तथा समाज से संबंधित अनेक विषयों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसी कारण अनेक विद्वान अग्निपुराण को भारतीय ज्ञान-परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण और बहुआयामी ग्रन्थ मानते हैं।

अग्निपुराण के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्वान बनाना नहीं बल्कि व्यक्ति को अच्छा, अनुशासित, नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बनाना है। इसमें शिक्षा को ज्ञान के साथ-साथ अच्छे आचरण, आत्मसंयम, कर्तव्यपालन और लोककल्याण से जोड़ा गया है। यही कारण है कि अग्निपुराण में वर्णित शैक्षिक और नैतिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं तथा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को मूल्यपरक और संस्कारयुक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में अग्निपुराण में वर्णित शिक्षा, नैतिकता और व्यक्तित्व निर्माण के सिद्धान्तों का अध्ययन किया गया है तथा यह समझने का प्रयास किया गया है कि ये सिद्धान्त वर्तमान समाज और शिक्षा व्यवस्था के लिए किस प्रकार उपयोगी और प्रेरणादायक हैं।

**भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा की अवधारणा :** भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना या जानकारी प्राप्त करना नहीं बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना है। प्राचीन भारतीय परंपरा के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को अज्ञान, बुराइयों और गलत मार्ग से दूर ले जाकर ज्ञान, सदाचार और आत्मविकास की ओर प्रेरित करे।

*"तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये"। (विष्णु पुराण (1.19.41)*

वही काम अच्छा है जिससे किसी प्रकार का बन्धन या दुःख न हो और वही सच्ची शिक्षा है जो मनुष्य को अज्ञान, बुरे विचारों और मोह से मुक्त करके सही मार्ग पर चलना सिखाए।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में केवल बौद्धिक विकास पर ही नहीं बल्कि शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास पर भी समान रुप से बल दिया गया है। शिक्षा का उद्देश्य एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ चरित्रवान, अनुशासित और समाज के प्रति उत्तरदायी भी हो।

वैदिक साहित्य में शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य - सत्य का पालन करना, आत्मसंयम और अनुशासन का पालन करना, गुरु के प्रति श्रद्धा और सम्मान रखना, समाज की सेवा करना, धर्म और नैतिक मूल्यों का पालन करना, लोककल्याण की भावना को विकसित करना, आत्मज्ञान और आत्मविकास की ओर अग्रसर होना।

अग्निपुराण के अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि अच्छे संस्कार, श्रेष्ठ आचरण, कर्तव्यनिष्ठ, आत्मसंयम और नैतिक जीवन का विकास करना है।

**अग्निपुराण का परिचय एवं भारतीय ज्ञान परम्परा में उसका स्थान :** अग्निपुराण अष्टादश महापुराणों में एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ जिसमें लगभग **383 अध्याय** हैं। यह ग्रन्थ केवल धार्मिक विषयों तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें धर्म, इतिहास, भूगोल, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, मुर्तिकला, ज्योतिष, धनुर्वेद तथा अन्य अनेक विषयों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसलिए इसे भारतीय ज्ञान परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है। भारतीय परम्परा के अनुसार महर्षि वेदव्यास ने पुराणों की रचना केवल धार्मिक शिक्षा देने के लिए नहीं की, बल्कि समाज को जीवन के विभिन्न

क्षेत्रों का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से इसकी रचना की।

अग्निपुराण में जीवन में उपयोगी व्यवहारिक ज्ञान दिया गया है। इसमें बताया है कि एक आदर्श राजा को कैसे शासन करना चाहिए, विद्यार्थी का आचरण कैसा होना चाहिए, चिकित्सक के क्या कर्तव्य होने चहिए तथा समाज में नैतिकता और अनुशासन कैसे बनाए रखा जा सकता है।

**अग्निपुराण में शिक्षा का स्वरूप :** भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना या जानकारी प्राप्त करना नहीं बल्कि इसका मुख्य लक्ष्य व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास करना है ताकि वह जिम्मेदार और अच्छा संस्कारी नागरिक बन सके। अग्निपुराण में धर्मशास्त्र, धनुर्वेद, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, काव्य, व्याकरण और शिल्प जैसी अनेक विद्याओं का वर्णन मिलता जिससे स्पष्ट होता है कि उस समय शिक्षा केवल एक विषय तक सीमित नहीं थी, बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान एक साथ दिया जाता था। यह बहुविषयक शिक्षा की अवधारणा है जो आज की राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के विचारों से भी काफी मेल खाती है।

सच्ची शिक्षा वही है जो व्यक्ति को कर्तव्यनिष्ठ, अनुशासित, आत्मसंयमी, विवेकशील और समाज के हित में कार्य करने वाला बनाए। ज्ञान और सदाचार का समन्वय ही वास्तविक शिक्षा की पहचान है।

**अग्निपुराण में गुरु-शिष्य परम्परा :** भारतीय शिक्षा-पद्धति का आधार गुरु-शिष्य परम्परा रही है। इसमें गुरु का स्थान सबसे ऊपर माना गया है। अग्निपुराण में शिक्षा के नियमों को अलग से नहीं बताया लेकिन धर्म, व्यवहार और संस्कार से जुड़े प्रसंगों में गुरु के प्रति सम्मान, सेवा, विनम्रता और अनुशासन पर विशेष बल दिया गया है। अग्निपुराण के अनुसार गुरु केवल पढ़ाने वाले व्यक्ति नहीं बल्कि वे शिष्य के जीवन और व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले मार्गदर्शक हैं। इसलिए शिष्य को विनम्र और अनुशासित रहना चाहिए, हमेशा सत्य बोले, नियमित रूप से अध्ययन और स्वाध्याय करे और गुरु की आज्ञा का सम्मान करे।

इसलिए शिक्षा के द्वारा अच्छे संस्कार, उत्तम चरित्र और आदर्श जीवन का निर्माण होता है। तैत्तिरीयोपनिषद् में गुरु अपने शिष्य को उपदेश देते हुए कहते हैं-

*"सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः"। (तैत्तिरीयोपनिषद् शिक्षावल्ली- 1/11/1)*

सत्य बोलो, धर्म के अनुसार आचरण करो और स्वाध्याय में कभी आलस्य मत करो।

**स्वाध्याय एवं आत्मानुशासन :** अग्निपुराण में ज्ञान को केवल शास्त्रों को याद करने या पढ़ने तक सीमित नहीं माना गया बल्कि इसके ज्ञान का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति के भीतर आत्मसंयम, विवेक और अच्छे आचरण का विकास करना है। इसलिए शिक्षा के साथ-साथ स्वाध्याय, सदाचार और आत्मानुशासन को भी बहुत महत्त्व दिया गया है। भारतीय ज्ञान परम्परा में **स्वाध्याय** का अर्थ केवल पुस्तकें पढ़ना नहीं, बल्कि नियमित अध्ययन करना, उस पर विचार करना और अपने जीवन तथा व्यवहार का स्वयं मूल्यांकन करना भी है। अर्थात् व्यक्ति अपने कार्यों और निर्णयों पर सोचकर उन्हें बेहतर बनाने का प्रयास करे।

स्वाध्याय से व्यक्ति में अच्छे गुण विकसित होते हैं जैसे- आत्मविश्वास, सही निर्णय लेने की क्षमता, धैर्य, विवेक, आत्मसंयम। ये सभी गुण व्यक्ति के अच्छे व्यक्तित्व, प्रभावी नेतृत्व और सफल जीवन को मजबूत बनाते हैं।

**अग्निपुराण में नैतिक शिक्षा :** अग्निपुराण में नैतिक शिक्षा को बहुत महत्त्व दिया गया है। यह ग्रन्थ मनुष्य को अच्छे संस्कार, सही व्यवहार और आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देता है। अग्निपुराण में कई महत्वपूर्ण नैतिक मूल्यों का वर्णन मिलता है जैसे-

- **सत्यः-** सत्य बोलने और सत्य के मार्ग पर चलने से व्यक्ति का सम्मान बढ़ता है जबकि झूठ व्यक्ति और समाज दोनों के लिए हानिकारक होता है।

- **दया:-** सभी जीवों के प्रति प्रेम और करुणा रखना भारतीय संस्कृति का प्रमुख गुण है। अग्निपुराण में दया को अच्छे और धार्मिक जीवन का आवश्यक हिस्सा बताया गया है।
- **दान:-** दान का अर्थ केवल धन देना नहीं है। ज्ञान देना, समय देना, जरूरतमंदों की सहायता करना और सेवा करना दान के ही रुप हैं। इससे समाज में सहयोग और भाईचारा बढ़ता है।
- **क्षमा:**- दूसरों की गलतियों को माफ करना एक महान गुण माना गया है। क्षमा करने वाला व्यक्ति धैर्यवान, शांत और आत्मसंयमी होता है।
- **संयम:**- अपनी इच्छाओं और इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना, अनुशासित जीवन जीना और मर्यादा का पालन करना अच्छे व्यक्तित्व की पहचान है।

इन सभी नैतिक मूल्यों का उद्देश्य केवल धार्मिक जीवन जीना नहीं बल्कि व्यक्ति को जिम्मेदार, संतुलित, चरित्रवान और समाज के लिए उपयोगी नागरिक बनाना भी है।

**शिक्षा और चरित्र निर्माण :** शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य अच्छे चरित्र का निर्माण करना है। वास्तव में वही व्यक्ति शिक्षित माना जाता है जो अपने ज्ञान का सही उपयोग करे और अच्छे गुणों को अपने जीवन में अपनाए।

अग्निपुराण के अनुसार एक सच्चा शिक्षित व्यक्ति वह है जो-

- सत्य बोलता हो।
- न्याय और ईमानदारी का पालन करता हो।
- अपने कर्तव्यों को पूरी जिम्मेदारी से निभाता हो।
- समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझता हो।
- आत्मसंयम रखता हो।
- और सभी के कल्याण की भावना से कार्य करता हो।

यदि शिक्षा केवल पढ़ाई और ज्ञान तक सीमित रह जाए और उसमें नैतिकता, अच्छे संस्कार और सदाचार का अभाव हो तो ऐसी शिक्षा अधूरी मानी जाती है। इसलिए अग्निपुराण में ज्ञान के साथ-साथ अच्छा आचरण और नैतिक मूल्यों को भी समान रूप से आवश्यक बताया गया है। इसलिए शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करती है और उसे एक आदर्श नागरिक बनाती है।

**विश्लेषण :** आज की शिक्षा व्यवस्था में अधिक ध्यान रोजगार, तकनीकी ज्ञान और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पर दिया जाता है। लेकिन अग्निपुराण के अनुसार शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं बल्कि एक अच्छे और आदर्श मनुष्य का निर्माण करना है।

अग्निपुराण के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति में अच्छे संस्कार, नैतिक मूल्य, आत्मसंयम, जिम्मेदारी और समाज के प्रति सेवा की भावना विकसित करे।

**अग्निपुराण में व्यक्तित्व निर्माण की अवधारणा :** भारतीय ज्ञान परम्परा में व्यक्तित्व निर्माण का अर्थ केवल बाहरी रूप या शारीरिक विकास नहीं बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से संतुलित विकास करना है। अग्निपुराण के अनुसार अच्छा व्यक्तित्व शिक्षा, अच्छे संस्कार, अनुशासन, आत्मसंयम और समाज की सेवा की भावना से विकसित होता है।

अग्निपुराण के अनुसार एक आदर्श व्यक्ति में ये गुण होने चाहिए- सत्य बोलने और सत्य का पालन करने की आदत, आत्मसंयम, विनम्रता, धैर्य, अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाने की भावना, न्यायप्रियता, दान और सेवा की भावना, सभी के प्रति दया और करुणा, सही-गलत की पहचान करना तथा समाज और लोककल्याण के लिए कार्य करने की सोच। यदि व्यक्ति के व्यवहार में अच्छे गुण और नैतिक मूल्य नहीं हैं तो उसका ज्ञान अधूरा माना जाता है।

**नेतृत्व एवं प्रबन्धन :** अग्निपुराण में राजा को केवल राज्य चलाने वाला शासक नहीं बल्कि उसे प्रजा का रक्षक, मार्गदर्शक और आदर्श व्यक्ति माना गया है। एक अच्छे शासक में ऐसे गुण होने चाहिए, जो समाज के कल्याण और न्यायपूर्ण शासन के लिए आवश्यक हों। अग्निपुराण के अनुसार एक आदर्श नेता या शासक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—

- न्याय के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता।
- हमेशा सत्य बोलने और सत्य का पालन करने की आदत।
- दूसरों की सलाह सुनने और उस पर विचार करने की क्षमता।
- सही समय पर समझदारी से निर्णय लेने का विवेक।
- जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी का भाव।
- आत्मसंयम और अनुशासन।
- तथा आवश्यकता के अनुसार दण्ड और दया, दोनों का संतुलित प्रयोग करने की क्षमता।

ये गुण केवल प्राचीन राजाओं के लिए ही नहीं बल्कि आज के प्रशासकों, शिक्षकों, प्रबंधकों, जनप्रतिनिधियों और अन्य नेतृत्व करने वाले लोगों के लिए भी समान रूप से उपयोगी हैं। इन गुणों को अपनाकर व्यक्ति एक अच्छा नेता बनने के साथ-साथ समाज के विकास और कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में अग्निपुराण :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (NEP-2020) के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी दिलाना नहीं है। इसका लक्ष्य विद्यार्थियों का समग्र विकास करना, उनमें अच्छे संस्कार, नैतिक मूल्य, भारतीय ज्ञान परम्परा की समझ, सही सोचने की क्षमता और जीवन के आवश्यक कौशल विकसित करना है। अग्निपुराण की शिक्षा-दृष्टि और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में समानता -

| **अग्निपुराण** | **राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (NEP-2020)** |
|---|---|
| चरित्र निर्माण | समग्र व्यक्तित्व विकास |
| नैतिक शिक्षा | मूल्य-आधारित शिक्षा |
| गुरु-शिष्य परम्परा | मार्गदर्शक प्रणाली |
| विभिन्न विषयों का ज्ञान | बहुविषयक शिक्षा |
| लोककल्याण की भावना | जिम्मेदार नागरिकता |
| आत्मसंयम | जीवन-कौशल और भावनात्मक बुद्धिमत्ता |

इस प्रकार अग्निपुराण में बताए गए शिक्षा के सिद्धान्त आज भी उपयोगी और प्रासंगिक हैं। ये केवल ज्ञान प्राप्त करने पर ही नहीं बल्कि अच्छे चरित्र, नैतिक मूल्यों, जिम्मेदारी और समाज के कल्याण पर भी बल देते हैं। इसलिए अग्निपुराण की शिक्षात्मक विचारधारा आज की भारतीय शिक्षा व्यवस्था को मूल्य-आधारित और संतुलित दिशा देने में सहायक हो सकती है।

**आलोचनात्मक विवेचन :** अग्निपुराण में शिक्षा, नैतिकता और व्यक्तित्व निर्माण से जुड़े अनेक अच्छे विचार मिलते हैं। फिर भी इसका अध्ययन करते समय कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

- **ऐतिहासिक संदर्भ:-** अग्निपुराण बहुत प्राचीन समय में लिखा गया था। इसलिए इसमें बताई गई कुछ सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को उस समय की परिस्थितियों के अनुसार समझना चाहिए।

- **सार्वकालिक मूल्य:-** इस ग्रन्थ में बताए गए सत्य, धर्म, आत्मसंयम, सेवा, न्याय और लोककल्याण जैसे मूल्य आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। ये समाज के लिए उपयोगी माने जाते हैं।
- **आधुनिक समय में उपयोग:-** आज के लोकतांत्रिक समाज में इन मूल्यों को समानता, मानवाधिकार, वैज्ञानिक सोच और सभी के सम्मान जैसे आधुनिक सिद्धान्तों के साथ अपनाना अधिक उचित होगा। इससे प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विचारों के बीच अच्छा समन्वय स्थापित किया जा सकता है।

**निष्कर्ष :** अग्निपुराण भारतीय ज्ञान परम्परा का एक महत्वपूर्ण और बहुआयामी ग्रन्थ है। इसमें शिक्षा को केवल पढ़ाई या ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं माना गया है बल्कि अच्छे व्यक्तित्व, नैतिक मूल्यों और समाज के प्रति जिम्मेदारी विकसित करने का माध्यम बताया गया है। इसके अनुसार सच्ची शिक्षा वही है, जो व्यक्ति को सत्य बोलने वाला, अपने कर्तव्यों का पालन करने वाला, आत्मसंयमी, न्यायप्रिय और समाज के हित में कार्य करने वाला बनाए। अग्निपुराण में गुरु-शिष्य परम्परा, स्वाध्याय, सदाचार, अनुशासन और धर्म के पालन पर विशेष बल दिया गया है। ये सभी सिद्धान्त आज भी शिक्षा और व्यक्तित्व निर्माण के लिए बहुत उपयोगी हैं।

आज के समय में शिक्षा का अधिक ध्यान नौकरी और रोजगार पर केंद्रित हो गया है। ऐसे समय में अग्निपुराण की मूल्य-आधारित शिक्षा हमें याद दिलाती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल करियर बनाना नहीं बल्कि एक अच्छा, जिम्मेदार और संस्कारी इंसान बनाना भी है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**


1. ***अग्निपुराण****। सम्पा. बलदेव उपाध्याय। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।*
2. ***अग्निपुराण****। गीता प्रेस, गोरखपुर।*
3. ***महाभारत*** *(शान्ति पर्व)। गीता प्रेस गोरखपुर ।*
4. ***भगवद्गीता****। गीता प्रेस गोरखपुर ।*
5. ***मनुस्मृति****। चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।*
6. ***याज्ञवल्क्य स्मृति****। चौखम्बा संस्कृत सीरीज।*
7. ***तैत्तिरीय उपनिषद्****। गीता प्रेस गोरखपुर ।*
8. ***छान्दोग्य उपनिषद्****। गीता प्रेस गोरखपुर ।*
9. ***ऋग्वेद****। सायणभाष्य सहित।*


**(ख) द्वितीयक स्त्रोत :**


1. *Kane, P. V. History of Dharmaśāstra. Bhandarkar Oriental Research Institute.*
2. *Altekar, A. S. Education in Ancient India. Nand Kishore & Bros.*
3. *Agrawala, Vasudeva Sharan. Indian Culture.*
4. *उपाध्याय, बलदेव। पुराण विमर्श।*
5. *पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र। भारतीय संस्कृति का विकास।*
6. *राधाकृष्णन, सर्वपल्ली। भारतीय दर्शन ।*
7. *शर्मा, रामशरण। प्राचीन भारत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास।*
8. *Kapoor, Kapil. Indian Knowledge Systems.*
9. *National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India.*
10. *Hazra, R. C. Studies in the Puranic Records on Hindu Rites and Customs.*


•